फरीदाबाद
मजदूर समाचार
जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम
नई सीरीज नम्बर 286 1/- अप्रैल 2012

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी.
फरीदाबाद – 121001

हूटर पे नाच

सुन्दर वादियों के बीच अपनी धुन में दौड़ रही ट्रेन। शीतल पवन के झौंके यात्रियों को मदमस्त कर रहे थे। एक यात्री, जिसकी लम्बी दाढी और घने-लम्बे बाल थे, उसे नींद के झौंके आ रहे थे। नींद में मदहोश हो जाने का डर था। बगल वाले यात्री से बोला, "भाई, सुबह चार बजे मेरा स्टेशन आयेगा। नींद बहुत आ रही है। आप मुझे उठा दोगे क्या?"

"आप निश्चिन्त हो कर सोओ। आपके स्टेशन पर आपको उठा देंगे।" बेफिकर हो कर गहरी नींद में सो गया। सहयात्री को उनकी लम्बी दाढ़ी और घने-लम्बे बाल बहुत आकर्षक लगे। रहा नहीं गया। लोरी गुनगुनाते हुये प्यार से दाढ़ी और बाल काट कर अपने पास रख लिये। चार बजे स्टेशन आते ही नींद से जगा कर आदरपूर्वक ट्रेन से उतार दिया। गाड़ी निकल गई और हमारे यात्री खुशी-खुशी ऑटो पकड़ कर घर पहुँचे। गर्मियों के दिन थे। कुल्ला करने शीशे के सामने खड़े हुये। जोर-जोर से हँसने लगे। फिर थोड़ा गुस्से में आये। नाराज होते हुये बोले, "अरे! मैंने तो मुझे चार बजे उठाने को कहा था, उन्होंने तो किसी और को उठा कर मेरे घर भेज दिया।"



पढने में यह कैसा लगा आप बताना। सुनाने में हमें बहुत मजा आया है। हम में प्रत्येक में अनेक रूप हैं। हँसी-खुशी-उल्लास वाला रूप। दुखी-परेशान-दरिद्र वाला रूप। असहाय रूप। बागी रूप। धीर-गम्भीर मुद्रा। तनमय-लीन रूप। नटखट रूप। आवेश-आवेग रूप। रास-रति-कामुक रूप। चंचल रूप। बेताब-बेचैन रूप। नृत्य मुद्रा। कोलाहल रूप। क्लान्त-हताश रूप। कवि-रचनाकार रूप। सखी रूप। योद्धा रूप। मसखरा रूप। प्रशस्ति-गान रूप। गर्व-गौरव रूप। लज्जा रूप। ताण्डव रूप। शान्त-प्रशान्त रूप। मस्त-मगन रूप। यह संक्षिप्त विवरण है।

प्रत्येक मानव में अलग-अलग रूप के आकार और गहनता भिन्न हैं। हर रूप सोच का एक आधार है, एक प्रस्थान-बिन्दू है। उदाहरण के लिये, हम सब यह जानते हैं कि अगर हम किसी से हँस कर प्रसन्न-मुद्रा में मिलते हैं तो तन-मन-मस्तिष्क-सोच-वार्ता में यह भाव-तरंग बहती है।

हम सब अपने में अनेकानेक रूप पाते हैं। कुछ रूपों को सोच तथा अभिव्यक्ति में आज बहुत वजन दिया जाता है, बहुत महत्व दिया जाता है। जबकि, कुछ रूपों पर आधारित सोच तथा अभिव्यक्ति को दबाया जाता है, छिपाया जाता है, दुत्कारा जाता है।

यात्री घर पहुँच कर अपने आप को नहीं पहचान पाया। दैनिक जीवन में हर रोज ऐसे क्षण आते रहते हैं। इन क्षणों से खेलते हुये हम सोचते हैं तो हमें अपने विराट रूप का आभास होता है और दैनिक, दैनिक नहीं रहता।

एक साथी ने सवाल पूछा, "आप अपने जीवन के किस क्षण को, किस पहलू को, किस रूप को बढते, गति पकड़ते देखना चाहते हैं?"

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

● *दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक 6656 रुपये (8 घण्टे के 256 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 7358 रुपये (8 घण्टे के 283 रुपये); कुशल श्रमिक 8112 रुपये (8 घण्टे के 312 रुपये)।* ●**हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.1.2012 से डी. ए. के 203 रुपये जुड़ने के बाद : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4847 रुपये (8 घण्टे के 186 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5497 रुपये (8 घण्टे के 211 रुपये)।*

बेनोक्स एग्जिम (गुरमान) मजदूर : "प्लॉट 19 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी है और गेट पर ताला लगा कर रात 11 बजे तक रोक लेते हैं। महिला मजदूरों को रात 9½ छोड़ देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से.... 8 की बजाय 9½ घण्टे काम के बाद के समय को ओवर टाइम कहते हैं, एक छुट्टी पर इस ओवर टाइम में से भी तीन घण्टे काट लेते हैं, और वैसे भी गड़बड़ी कर हर महीने 200-300 रुपये खा जाते हैं। यहाँ 1000 मजदूर **फोसिल** के लिये चमड़े के थैले बनाते हैं। इन 1000 में 600 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बायर आते हैं तब इन 600 मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर रखते हैं। फरवरी में 5 से 15 फरवरी के दौरान कभी जाँच की बात थी। बिना ई.एस.आई. और पी.एफ. वाले 600 मजदूरों की 1 से 15 फरवरी तक ड्युटी सुबह 9 की बजाय दोपहर बाद 1 बजे से कर दी। दोपहर बाद वाली यह ड्युटी 22 फरवरी तक रही – जाँच वाले 22 फरवरी को 11 बजे आये थे। रोज 9½ घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के इन 600 मजदूरों में हैल्परों को 4000-4200 रुपये और कारीगरों को 5300-6000 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले हैल्परों को 9½ घण्टे रोज पर 26 दिन के 4500-4800 रुपये। काम के लिये भारी दबाव, पानी-पेशाब के लिये टोकन लो..... एक मजदूर ने टेबल पर पेशाब कर दिया तब कुछ दिन टोकन बन्द किया और फिर शुरू। पानी-पेशाब का टोकन कम्पनी का और भोजन का टोकन बायर का। प्रतिदिन प्रति मजदूर 50 रुपये भोजन के लिये बायर से आते हैं और कम्पनी खर्च 10 रुपये ही करती है। भोजन खराब और कम, 5 पूड़ी से पेट नहीं भरता। कैन्टीन में भोजन अवकाश के समय बहुत भीड़, धक्का-मुक्की।"

अलंकार श्रमिक : "410 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूर रोज सुबह 9 से रात 10-11 तक काम करते हैं और अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। एक-दो घण्टे फैक्ट्री में ही सो जाते हैं या छुट्टी कर लेते हैं. .... छुट्टी करने पर साहब गाली देते हैं। रविवार को भी फुल नाइट लगती है, यानी, रविवार को सुबह 9 बजे काम आरम्भ और सोमवार सुबह 6 बजे जा कर छुट्टी....तीन घण्टे बाद फिर काम में लगने के लिये। महीने में 250-300 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 18-19 रुपये प्रतिघण्टा। लगातार 21 घण्टे काम करवाते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। फैक्ट्री में काम करती 200 महिला मजदूरों को रात 9½-10 बजे छोड़ देते हैं। यहाँ **चिकोस** और **आई टी एस** के वस्त्र तैयार होते हैं। हैल्पर की तनखा 4200 रुपये, चैकर की 4650 और सिलाई कारीगर की 4800 रुपये।"

कटलर हैमर कामगार : "20/4 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित इलेक्ट्रिकल कन्ट्रोल सिस्टम बनाने वाली फैक्ट्री में 150 स्थाई मजदूर, चार ठेकेदारों के जरिये तनखा पर रखे 1200 वरकर, और एक ठेकेदार के जरिये पीस रेट पर रखे 100 मजदूर हैं। अब टूल रूम आदि में आई. टी.आई. व डिप्लोमा वाले स्थाई मजदूरों की भर्ती कम्पनी दिल्ली में करती है और उन्हें स्टाफ कहती है। हर वर्ष की तरह इस साल भी ठेकेदारों के जिरये रखे सब मजदूरों को 31 मार्च को नौकरी से निकाल दिया। पाँच अप्रैल से ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों को नये सिरे से रखेंगे। ड्युटी के बाद 2-4 घण्टे रोकने पर 26 मार्च से नकद पैसे दिये (सिंगल रेट से)। वैसे, ड्युटी के बाद रोकने पर बदले में छुट्टी देने का प्रावधान कर रखा है। लेकिन अक्टूबर 2011 से ड्युटी बाद 2-3 घण्टे रोकने के बदले में छुट्टी देना बन्द कर दिया, 4 घण्टे रोकने के बदले छुट्टी देना जारी रखा। सुपरवाइजर कहते रुको, छुट्टी मिलेगी। टाइम आफिस वाले बाद में कहते हैं कि 2-3 अतिरिक्त घण्टों के बदले कोई गेट पास नहीं, कोई छुट्टी नहीं। इस प्रकार महीने में 10 से 20 घण्टे मजदूरों से कम्पनी व ठेकेदार बेगार लेते हैं। और, फैक्ट्री में शौचालय बहुत-ही गन्दे रहते हैं।"

ओरियन्ट क्राफ्ट वरकर : "प्लॉट 15 सैक्टर-5 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में करीब 3000 मजदूर **सी के, एक्सप्रेस, अनटेलर, गैप** के वस्त्र बनाते हैं। काम का भारी दबाव : पानी-पेशाब के लिये जाने पर प्रोडक्शन इनचार्ज गाली देते हैं, हाथ भी छोड़ देते हैं, तीन इनचार्ज इकट्ठे हो कर मजदूर को पकड़ कर हिला देते हैं। जो पुराने सुपरवाइजर गाली नहीं देते थे उन्हें हटा दिया है और नये सुपरवाइजरों को सिखाते हैं कि मजदूरों को दबाओ, जल्दी काम करवाओ। इमरजैन्सी में भी गेट पास नहीं देते, कहते हैं कि यहाँ ओवर टाइम दुगुनी दर से दिया जाता है इसलिये गेट पास नहीं दिया जाता। सिलाई विभाग में महीने में 50-60 घण्टे और फिनिशिंग विभाग में 125 घण्टे ओवर टाइम। लिखा 8 घण्टे में दो चाय है पर देते 1 हैं। गेट पर दिखाने के लिये 6 साइकिलें रखी पर वे मजदूरों को दी नहीं – हर फैक्ट्री में हर मजदूर की तनखा से हर महीने 5 रुपये हरियाणा सरकार के लिये श्रमिक कल्याण नाम से काटे जाते हैं।" **(बाकी पेज तीन पर)**

कादिमी टूल्स मजदूर : "118 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सुबह 6 से दोपहर बाद 2½, फिर 2¼ से रात 10¼ और रात 10½ से अगली सुबह 6¼ की शिफ्टों में 250 मजदूर अमरीका में कम्पनी को निर्यात के लिये स्क्रू की डाई बनाते हैं। कठिन काम है, बिना हैल्पर के 35 किलो वजन उठाना। रविवार को भी ड्युटी – 26 जनवरी, 15 अगस्त को भी काम। साल में 365 दिन काम। ड्युटी के बाद रोकते हैं तब 16-16¼ घण्टे फैक्ट्री में रहना पड़ता है, कम्पनी रोटी के लिये पैसे नहीं देती। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

गुप्ता एग्जिम श्रमिक : "पृथला-छपरौला रोड, पलवल स्थित फैक्ट्री में सिलाई विभाग में हैल्पर तथा चैकर को 10 तारीख से पहले तनखा जबकि सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं और उन्हें ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के संग तनखा 15-20 तारीख को। ड्युटी सुबह 9½ आरम्भ होती है और जब अगली सुबह 4 बजे छोड़ते हैं तब सिलाई विभाग मजदूर फिर 9½ से काम आरम्भ नहीं करते, छुट्टी कर लेते हैं जबकि फिनिशिंग विभाग वरकर फिर 9½ से काम पर लग जाते हैं। सिलाई विभाग में महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से लेकिन पे-स्लिप में 10-15 घण्टे ओवर टाइम तथा भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं। फिनिशिंग विभाग में महीने में 200 घण्टे तक ओवर टाइम। फैक्ट्री में डाइंग विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। यहाँ हौजरी विभाग भी है। कैन्टीन में सादी थाली 18 रुपये में। ड्युटी 9½ से है और फरीदाबाद से बसें 8 बजे शुरू हो जाती हैं। दो हजार मजदूर **जी एन सी, आइजोड, मदरहुड** आदि के वस्त्र बनाते हैं।"

ओमैक्स कामगार : "प्लॉट 6 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूर, 50 कैजुअल वरकर और 250 स्थाई मजदूर कई शिफ्टों में काम करते हैं। पेन्ट शॉप में महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम, वैल्ड शॉप में 115-130 घण्टे, पावर प्रेस शॉप में 100-125 घण्टे ओवर टाइम – भुगतान सिंगल रेट से और पेन्ट शॉप में ठेकेदार 50 घण्टे खा भी जाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे सब मजदूरों की तनखा से काटते हैं पर ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं और छोड़ने पर बहुत कम मजदूरों को फण्ड के पैसे मिलते हैं। रविवार को भी काम..... कम्पनी कुछ रविवारों को कार्य दिवस बना देती है.... इन रविवारों के अवकाश को त्यौहारी छुट्टी में एडजस्ट कर देते हैं और वर्ष में 10-12 त्यौहारी छुट्टियाँ खा जाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 4300-4800 रुपये। यहाँ **मिण्डा, सुजुकी, हीरो, ए डी** आदि का काम होता है।"

कम्पारी वरकर : "517 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे 500 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, सिलाई कारीगर पीस रेट पर। महीने में 60 से 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और 8-10 घण्टे खा भी जाते हैं। तनखा 7 से पहले की बजाय 15 तारीख को। बीच-बीच में घाटा लगा है कहते हैं..... जिस महीने घाटा बताते हैं उस महीने स्थाई मजदूरों की तनखा से 1000-2000,

करते हैं - और करिये - बताइये

फरीदाबाद में इन्डस्ट्रीयल एरिया में प्लॉट 30/8 स्थित **ग्लोब कैपेसिटर लिमिटेड** फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट 10½ घण्टे को 8 घण्टे कहती है। यहाँ काम करते 500 मजदूरों में 50 महिला मजदूरों तथा 250 पुरुष मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, त्यौहारी छुट्टी नहीं। इन 300 मजदूरों को 10½ घण्टे के 175 रुपये देते हैं, यानी इनकी तनखा (8 घण्टे 26 दिन) 3640 रुपये। जिन 200 मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उनकी तनखा 4644-5650 रुपये है। सुबह 8 से रात 8½ और रात 8 से अगली सुबह 8 की दो शिफ्ट हैं। साढे बारह घण्टे में 2 घण्टे और 12 घण्टे में 1½ घण्टे को कम्पनी ओवर टाइम कहती है, भुगतान सिंगल रेट से। रविवार को साँय 6½ बजे बाद काम बन्द। महीने में 10-12 फुल नाइट, यानी सुबह 8 बजे काम आरम्भ करने वाला मजदूर रात 8½ बजे छूटने की बजाय अगली सुबह 7½ बजे छूटता है और फिर आधे घण्टे बाद, 8 बजे से उसकी ड्युटी शुरू हो जाती है। फैक्ट्री में 1 एम एम डी से 150 एम एम डी के कैपेसिटर **एल जी, सैमसंग, जी ई जेनर, ओरियन्ट पँखे** के लिये बनने के संग-संग पी एस आई, मेवे, आल्को को निर्यात भी किये जाते हैं।

मजदूर लाइन पर काम करते-करते ही बात कर लेते हैं। भोजन अवकाश में बातें की। आठ घण्टे की ड्युटी, तनखा बढाने, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से के लिये मिल कर कदम उठाने का तय हुआ। कोई नेता नहीं। बीस मार्च से मजदूरों ने फुल नाइट करना बन्द कर दिया। फरवरी की तनखा 7 मार्च को लेने के बाद मजदूरों ने साँय 6½ छुट्टी कर ली। कोई मजदूर रात 8½ तक रुका ही नहीं – 7½ बजे स्टाफ को गाड़ियों में माल लोड करना पड़ा। रविवार को सब मजदूरों ने छुट्टी की है। महिला और पुरुष मजदूर सोमवार को ड्युटी करेंगे और कम्पनी क्या करती है यह देखेंगे। कम्पनी ने टालमटोल की तो साँय 4½ बजे दिन की शिफ्ट वाले मजदूर छुट्टी करेंगे।

(पेज दो का शेष)

दस हजार रुपये वाले स्टाफ के 2500, पच्चीस हजार तनखा वाले स्टाफ के 5000 रुपये काट लेते हैं। जनरल मैनेजर मैडम गाली देती है। बड़े साहब कहते हैं कि पुलिस कम्पनी के साथ है – पुलिसवालों के कपड़े फैक्ट्री में धुलते हैं।"

एडिगियर इण्डिया श्रमिक : "प्लॉट 253 सैक्टर-6 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर सुबह 9½ बजे चमड़े की बैल्ट, बैग, पर्स बनाना आरम्भ करते हैं पर छूटने का कोई समय नहीं है। रविवार को भी काम। महीने में 150 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। वेतन भुगतान रजिस्टर में हस्ताक्षर 6 तारीख को करवा लेते हैं पर भुगतान बहुत बाद में करते हैं – फरवरी की तनखा आधे मजदूरों को 20 मार्च को दी और आधों को आज 23 मार्च तक नहीं दी है। स्टाफ को तो जनवरी की तनखा 10 मार्च को जा कर दी। कैन्टीन नहीं है। रात को 10½ बजे मात्र चाय देते हैं और वह भी खराब। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटते हैं पर ई.एस. आई. कार्ड नहीं दिये हैं और नौकरी छोड़ने पर बहुत कम मजदूरों को फण्ड के पैसे मिलते हैं। गाली हर समय साहबों की जुबान पर रहती है।"

कलमकारी कामगार : "383 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में स्टाफ ही स्थाई है, 300 मजदूर चार ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। दो वर्ष से बोनस और सवेतन छुट्टियाँ नहीं दे रहे। इधर जनवरी से देय डी.ए. के 203 रुपये भी नहीं दिये हैं। सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी है, ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से। यहाँ **आर डी, मदरहुड, ऋतु कुमार** के वस्त्र तैयार होते हैं।" **(बाकी पेज चार पर)**

आयन क्लब वरकर : "गुड़गाँव में सिकन्दरपुर मैट्रो स्टेशन के पास जी एम डी मॉल में स्थित रेस्टोरेन्ट में रोज 12 घण्टे की ड्युटी है, महीने के तीसों दिन। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 7000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तनखा 20-25 तारीख को जा कर।"

भारत इम्ब्राइड्री श्रमिक : "284 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8 और रात 8 से अगली सुबह 8 की दो शिफ्ट हैं, रविवार को भी। जब 15 दिन में शिफ्ट बदलते हैं तब रात वाले 20 घण्टे, रात 8 से अगले दिन साँय 4 तक और दिन वाले 16 घण्टे, साँय 4 से अगली सुबह 8 तक काम करते हैं। बीस-सोलह घण्टे काम के समय रोटी के लिये 30 रुपये देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। नये हैल्पर को 8 घण्टे के 120 रुपये देते हैं। यहाँ **गौरव, ऋचा** का कम्प्युटर इम्ब्राइड्री का काम होता है।"

कृष्णा ग्रुप अल्टोलिन कामगार : "प्लॉट 47 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर 10½ घण्टे (सुबह 8 से साँय 6½) और 13½ घण्टे (साँय 6½ से अगली सुबह 8) की शिफ्टों में **महिन्द्रा, होण्डा, मारुति सुजुकी** कारों और **स्वराज** मिनी बसों की छतों की फैब्रिक का काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रसायनों का काम है, खुजली होती है, मजदूर टिकते नहीं। ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकरों में 40-50 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

ईस्टर्न मेडिकिट वरकर : "उद्योग विहार, गुड़गाँव स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों से अधिकतर कैजुअल वरकरों को निकाल दिया है और जो बचे हैं उन्हें फरवरी की तनखा आज 30 मार्च तक नहीं दी है। यहाँ काम करते 1150 स्थाई मजदूरों को फरवरी की तनखा 17 मार्च को दी।"

डब्लू एस पी एल कामगार : "प्लॉट 11 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में चार-पाँच वर्ष से प्रतिदिन सुबह 8 से रात 2 बजे की शिफ्ट है। फैक्ट्री के अन्दर ही सो जाते हैं। रविवार को दोपहर बाद 2 बजे, 5 बजे छोड़ देते हैं। महीने में ओवर टाइम के घण्टे कौन जोड़ेगा.... भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 18 रुपये प्रतिघण्टा। यहाँ **मारुति सुजुकी** की सेफ्टी बैल्ट बनती हैं। पानी ठीक नहीं, शौचालय गन्दे, गाली बहुत और

दादरा नगर हवेली

आलोक इन्डस्ट्रीज स्पिनिंग डिविजन मजदूर : केन्द्र सरकार प्रशासित क्षेत्र के गाँव रखोली, डाक सिलवासा स्थित फैक्ट्री में काम करने 2003 में गया था। फैक्ट्री में तब तीन प्लान्ट कार्यरत थे और कई बन रहे थे। यहाँ कई प्रकार के सूती धागे, कई तरह के पोलिस्टर के धागे और कई प्रकार के मिक्स धागे बनते हैं। एक महीने ट्रेनी रखा तब 70 रुपये रोज और फिर 90 रुपये 8 घण्टे के कर दिये। लेकिन महीने में कम से कम 24 हाजिरी जरूरी थी। एक भी हाजिरी 24 से कम हुई तो 5 रुपये प्रतिदिन के काट लेते थे, 90 की जगह 85 रुपये दिहाड़ी कर देते थे। ई.एस.आई. तथा पी.एफ. नहीं थी।

2010 में फिर वहाँ काम करने गया। फैक्ट्री में 9 प्लान्ट हैं। तीन हजार के करीब मजदूर काम करते हैं। स्थाई मजदूर एक भी नहीं है। कम्पनी द्वारा भर्ती कैजुअल वरकर 700 के करीब हैं और आठ-दस ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सँख्या 2000 से ज्यादा है। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। कैजुअल वरकरों में हैल्परों की तनखा 4500 रुपये तथा ऑपरेटरों की 5000-8000 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 5000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। तनखा कम, काम का बोझ ज्यादा और कार्यस्थल पर भारी गर्मी के कारण बहुत लोग छोड़ते रहते हैं। महीने में 24 हाजिरी पर 250 रुपये इनाम देते हैं फिर भी आधे मजदूरों की इतनी हाजिरी नहीं होती। अप्रैल-मई-जून में 24 हाजिरी पर इनाम 1000 रुपये कर देते हैं। फैक्ट्री में 50% मजदूर उड़ीसा से, 20% स्थानीय, 20% उत्तर प्रदेश से और बाकी बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश से हैं। स्थानीय मजदूर छुट्टी-डाँडी ज्यादा करते हैं। रहने के लिये कमरे कम्पनी ने ले रखे हैं। एक कमरे में 6 मजदूर और हर वरकर की तनखा से कमरे के 300 रुपये कम्पनी काटती है। वैसे, बाहर कमरे का किराया 1000 रुपये है। कम्पनी द्वारा भर्ती कैजुअल वरकरों की तनखा ए टी एम द्वारा, पी.एफ. राशि काटते हैं, ई.एस. आई. का पता नहीं, और कैन्टीन में थाली 5 रुपये में। एक थाली से पेट नहीं भरता, दो थाली लेनी ही पड़ती हैं। छोड़ने पर फण्ड के पैसों के लिये बहुत मगजमारी, कम ही ले पाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को कैन्टीन में थाली 15 रुपये में, ... ज्यादातर कमरे से भोजन बना कर लाते हैं। रखोली में ही आलोक इन्डस्ट्रीज की वीविंग, प्रोसेसिंग एण्ड डाइंग और गारमेन्ट फैक्ट्रियाँ हैं। कम्पनी की सिलवासा और वापी में भी फैक्ट्रियाँ हैं।

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।

करते हैं – और करिये – बताइये

फरीदाबाद में सैक्टर-24 में प्लॉट 265 स्थित **लखानी वरदान समूह** की फैक्ट्री में शिफ्ट आरम्भ के समय सुबह 8 बजे और शिफ्ट समाप्ति पर साँय 4½ बजे हूटर बजता है। मजदूरों के भोजन अवकाश के लिये 12, 12½, 1, 1½, 2 बजे हूटर बजता है। एक दिन 2½ बजे हूटर बजा। क्या हुआ? क्या हुआ ? सुपरवाइजर और मैनेजर बोले कि एच.आर. विभाग पहुँचो। सुपरवाइजर-मैनेजर-मजदूर एकत्र हुये। डेढ-दो हजार लड़कों और लड़कियों में आपस में बातचीतें। कोलाहल, शोर। जनरल मैनेजर का भाषण। माइक में गड़बड़। ध्यान से सुनने पर भी कोलाहल और साहब की भाषा के कारण कम ही समझ में आ रहा था। आग से बचाव पर भाषण था। फिर आग बुझाने में विशेषज्ञों ने बातें रखी। सिलेन्डर दिखा कर फायर अफसर ने पूछा : "जानते हो इसमें कौन-सी गैस है?" कोई मजदूर कुछ नहीं बोला। अफसर बोला : "इसमें सी ओ टू गैस है। आग बिजली से लगी हो, चाहे पैट्रोल या थिन्नर से लगी हो, यह गैस बुझा सकती है। आग कपडे में लगी हो चाहे रबड़ में, यह गैस बुझा सकती है। इस सिलेन्डर को चलाते कैसे हैं ?.......... फैक्ट्री में कभी अचानक हूटर बजे तो जान बचाने के लिये तत्काल काम छोड़ कर खुले स्थान की तरफ दौड़ना। यहाँ खुले में एकत्र होना।" मीटिंग एक घण्टे चली।

अगले दिन सुबह 10 बजे के करीब अचानक हूटर बजा। लगता है आग लग गई। काम छोड़ कर मजदूर बाहर भागे। स्त्री और पुरुष मजदूर एच.आर. विभाग पर एकत्र। इधर-उधर देखा। कहीं धुँआ दिखाई नहीं दिया..... और मजदूर जोर-जोर से बोलने लगे : तनखा दो ! तनखा दो !

हूटर बजने पर सुपरवाइजर, मैनेजर, जनरल मैनेजर भी बाहर निकले थे। जी एम ने फोन कर सेक्युरिटी से पूछा। सेक्युरिटी वाले आये। एच.आर. वाले मजदूरों से कह रहे थे : "कहीं आग नहीं लगी। अपने-अपने काम पर जाओ।" रौब से बात करने वाला तनखा देने वाला अफसर डर-डर कर कह रहा था : "जाओ-जाओ, चलो-चलो। यहाँ कहीं आग नहीं लगी है।" और, स्त्री-पुरुष मजदूरों का नाद स्वर : तनखा दो ! तनखा दो ! जनरल मैनेजर एच.आर. विभाग पहुँचा और बोला : "पैसे आयेंगे। तुम्हें शाम तक मिल जायेंगे। जाओ काम करो। हूटर खराब है। कहीं आग नहीं लगी है।"

शाम तक पैसे नहीं दिये। अगले दिन मजदूर 12 बजे से काम बन्द करने लगे और 4½ तक काम बन्द रखा। पैसे नहीं दिये। तीसरे दिन 10 बजे से मजदूर काम बन्द करने लगे और 4½ तक काम बन्द रखा। पैसे नहीं दिये। चौथे दिन सुबह-सुबह ही मैनेजमेन्ट ने पैसे बाँटे।

लखानी वरदान समूह की फैक्ट्रियों में मजदूरों को 37-40 दिन काम करते हो जाते हैं तब भी 30 दिन के पैसे नहीं देते। वेतन 7-10 तारीख से पहले देने की बजाय 18-20 तारीख के बाद। हूटर वाली बातें दिसम्बर 2011 की हैं। इधर फरवरी माह की तनखा प्लॉट 265 सैक्टर-24 में 18 मार्च को देनी आरम्भ की थी और क्लोजिंग विभाग में 22 मार्च तक नहीं दी तो मजदूरों ने 22 व 23 को काम ढीला किया और 24 मार्च को पूरे दिन काम बन्द रखा। रविवार के साप्ताहिक अवकाश के बाद 26 व 27 मार्च को भी पूरे दिन काम बन्द रखा। मैनेजमेन्ट ने 28 मार्च को सुबह फरवरी की तनखा दी। इस फैक्ट्री में **पूमा, केचुआ, पेस** के जूते-चप्पल बनते हैं।

होली पर तनखा देने की बजाय एडवान्स देने लगे तब **लखानी रबड़ उद्योग** (प्लॉट 131 सैक्टर-24) में मिक्सिंग विभाग के 300 मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। इस पर मिक्सिंग मजदूरों को 7 मार्च को फरवरी की तनखा दी गई जबकि अन्य विभागों के मजदूरों की तनखा कम्पनी ने लटका दी थी।

निमन्त्रण

आज ऐसे तौर-तरीकों की आवश्यकता है जो सात अरब लोगों की सक्रिय साझेदारी में योगदान दे सकें। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। अप्रैल में 29 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाक्‌युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये ; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

(पेज तीन का शेष)

एक वर्ष के पी.एफ. के पैसे खा जाते हैं।"

ऋचा ग्लोबल कामगार : "232 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कपड़े धुलाई के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे 100 मजदूरों की सुबह 9½ से रात 8 और रात 8 से अगली सुबह 5-6 बजे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से और गड़बड़ी कर हर महीने 200-400 रुपये खा भी जाते हैं। तनखा देरी से, 17-20 को।"

मारुति सुजुकी कैन्टीन वरकर

मारुति सुजुकी मानेसर कैन्टीन वरकर : फैक्ट्री में अब दो कैन्टीन हैं। दोनों कैन्टीनों में काम करते मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ए-कैन्टीन बड़ी है। इसमें भोजन के लिये 16 काउन्टर हैं। दो मजदूर एक काउन्टर सम्भालते हैं। सब्जी काटने वाले, भोजन बनाने वाले, काउन्टरों पर पहुँचाने वाले, बर्तन धोने वाले, कैन्टीन की सफाई करने वाले, चाय बनाने वाले, चाय विभागों में ले जाने वाले। सुबह 8½ चाय व स्नैक्स, 10½ बजे चाय, 2½ बजे चाय व बिस्कुट, 3½ बजे चाय व बिस्कुट जनरल शिफ्ट तथा स्टाफ को, साँय 6 बजे चाय व स्नैक्स। भोजन अवकाश सुबह 11 से दोपहर बाद 3 बजे तक लगातार। यह कार्य सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट वाले कैन्टीन वरकरों के हैं। फिर ऐसे ही कार्य रात 8 से अगली सुबह 8 की शिफ्ट वाले कैन्टीन मजदूर करते हैं। ए-कैन्टीन में दोनों प्लान्टों के असेम्बली विभाग मजदूर, दोनों प्लान्टों के पेन्ट शॉप वरकर, एस एण्ड डी (ड्राइवर तथा रिपेयर वरकर) तथा तीसरे प्लान्ट का निर्माण कर रहे लार्सन एण्ड टूब्रो के 2500 मजदूर भोजन करते हैं। ए-कैन्टीन में 350 और बी-कैन्टीन में 150 से ज्यादा वरकर दोनों शिफ्टों में हैं। कैन्टीन मजदूरों की शिफ्ट नहीं बदलती – रात वाले लगातार रात में ही रहते हैं। ठेकेदार बदल जाते हैं पर कैन्टीन वरकर अधिकतर वही रहते हैं। इधर 1 मार्च से ठेकेदार बदला है और कहा है कि तनखा बढायेंगे। पुराने उस्ताद को 19,000 रुपये मिलते थे, नये को 13,500 रुपये देंगे। समोसा, रोटी बनाने और मशीन से आटा गूँथने वालों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 5000 रुपये। बाकी सब कैन्टीन वरकरों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 4000 रुपये देते थे जिनमें से 250 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटते थे। अब नये ठेकेदार ने कहा है कि पहली मार्च से 12 घण्टे रोज काम पर 26 दिन के 4400 रुपये देंगे। पाँच सौ से ज्यादा कैन्टीन मजदूरों पर एक जनरल मैनेजर, 5 मैनेजर और 30 से ज्यादा सुपरवाइजर दोनों कैन्टीनों में हैं। ई.एस.आई. कार्ड किसी भी कैन्टीन वरकर को नहीं दिया है। पे-स्लिप कभी भी कैन्टीन मजदूरों को नहीं देते। जब 12 घण्टे बाद 2-4 घण्टे काम के लिये रोकते हैं तब कहते हैं कि इनके पैसे देंगे पर फिर देते नहीं। काम का भारी दबाव रहता है। किसी दिन किसी बन्दे ने छुट्टी कर ली तो दो-तीन जगह काम करने में भारी परेशानी होती है। शिकायत हो जायेगी, मैनेजर डाँटेगा के चक्कर में चाय और स्नैक्स दौड़-दौड़ कर प्रोडक्शन वालों को विभागों में पहुँचाते हैं। फैक्ट्री 600 एकड़ में फैली है। शुक्र है कि चाय प्रोडक्शन वालों को ही पहुँचानी होती है। **सुजुकी पावरट्रेन कैन्टीन** में स्थितियाँ ऐसी ही हैं। यहाँ भी कैन्टीन वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – 8 से 8 की बजाय यहाँ सुबह 9 से रात 9 और रात 9 से अगली सुबह 9 की शिफ्ट हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14